बनास जन

शैलेश मटियानी की कहानियाँ : संवेदना के विविध पक्ष

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

शैलेश मटियानी की कहानियाँ : संवेदना के विविध पक्ष

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

सहयोग राशि : 50 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–80 रुपये
100 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–130 रुपये
7000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
12,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात	4
शैलेश मटियानी की कहानियाँ : संवेदना के विविध पक्ष	5
शैलेश मटियानी की कहानियों में आँचलिकता	7
शैलेश मटियानी की कहानियों में गरीब व अपराधी वर्ग का चित्रण	26
शैलेश मटियानी की कहानियों में प्रेम-तत्त्व	45
उपसंहार	72

अपनी बात

शैलेश मटियानी पर युवा अध्येता असीम अग्रवाल के इस लम्बे विनिबंध को विशेष अंक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इस विशेषांक का एक प्रसंग यह भी है कि यह नवलकिशोर स्मृति सम्मान अंक के रूप में आ रहा है।

हिन्दी साहित्य और संस्कृति की पत्रिका 'बनास जन' ने विख्यात आलोचक प्रो. नवल किशोर की स्मृति में आलोचना सम्मान प्रदान करने का निर्णय लिया था। वर्ष 2024 से प्रारम्भ यह सम्मान पहली बार बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की युवा अध्येता निवेदिता प्रसाद को उनके विनिबंध 'नजीर अकबराबादी का महत्त्व' पर दिया गया था। वर्ष 2025 के लिए यह सम्मान दिल्ली विश्वविद्यालय के युवा अध्येता असीम अग्रवाल को उनके विनिबंध 'शैलेश मटियानी की कहानियाँ : संवेदना के विविध पक्ष' पर दिया जा रहा है। सम्मान के लिए गठित निर्णायक समिति के सदस्यों प्रो दुर्गाप्रसाद अग्रवाल (जयपुर), प्रो. माधव हाड़ा (उदयपुर) और संयोजक प्रो. मलय पानेरी (उदयपुर) ने सर्वसम्मति से असीम अग्रवाल की पाँडुलिपि का चयन किया। सम्प्रति दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित हंसराज कॉलेज में अतिथि शिक्षक के रूप में कार्यरत डॉ. असीम अग्रवाल का जन्म 24 नवम्बर 1992 को अमरोहा (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। हिन्दू कालेज, दिल्ली से स्नातक तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर के बाद उन्होंने इसी विश्वविद्यालय से प्रो. विनोद तिवारी के निर्देशन में पीएच.डी की उपाधि ग्रहण की। शैलेश मटियानी पर उनके विनिबंध पर अपनी संस्तुति में प्रो. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ने कहा कि नयी कहानी के अपनी ढंग के अलहदा कथाकार मटियानी का अध्ययन इस दृष्टि महत्त्वपूर्ण है कि यह हिंदी कहानी की व्यापकता और गहराई को भी दर्शाता है जो पहाड़ से रेगिस्तान और समुद्र से मैदान तक के भारतीय जीवन को प्रतिबिंबित करती है। प्रो. हाड़ा ने अपनी संस्तुति में कहा कि असीम का विनिबंध कहानी अध्ययन के क्षेत्र में गंभीर और जिम्मेदार आलोचना का परिचय देता है। उक्त सम्मान के लिए परामर्श समिति के संयोजक और श्रमजीवी कालेज, उदयपुर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. मलय पानेरी ने बताया कि आलोचना के क्षेत्र में अपने अविस्मरणीय योगदान के लिए प्रो. नवलकिशोर को जाना जाता है। उनकी स्मृति को स्थाई रखने के लिए यह सम्मान प्रारम्भ किया गया है जिससे देश भर के युवा अध्येताओं को भी नया मंच मिल सकेगा।

×××

हिन्दी कहानी के गंभीर पाठकों के लिए शैलेश मटियानी का नाम नया नहीं है। उन्होंने लगभग सवा दो सौ कहानियाँ लिखीं। उनकी कहानियाँ बताती हैं कि हिन्दी साहित्य का दायरा कितना बड़ा है और उसमें कितनी विविधता है। वे भारतीय जीवन के गहरे मर्मज्ञ हैं और इस जीवन की तमाम बारीकियाँ-विडंबनाएँ उनकी कहानियों में आती हैं। वे जीवन के गहन अन्धकार का चित्रण करते हुए भी आशा का दामन नहीं छोड़ते।

आशा है पाठकों को यह अंक पसंद आएगा और मटियानी जी की कहानियों की तरफ ले जा सकेगा। निर्णायकों का आभार और असीम जी को हार्दिक बधाई।

पल्लव

असीम अग्रवाल

शैलेश मटियानी की कहानियाँ : संवेदना के विविध पक्ष

शैलेश मटियानी का जन्म 14 अक्टूबर, 1931 को उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जनपद में पट्टी तल्ला लखनपुर के बाड़ेछीना नामक गाँव में हुआ था। इनके बचपन का नाम रमेशचन्द्र सिंह मटियानी था। पिता का नाम विशन सिंह और माँ लक्ष्मी देवी थीं। इनके पूर्वज मूलतः बाड़ेछीना से सात किलोमीटर दूर 'मटेना' गाँव के रहने वाले थे। इसी गाँव के नाम के आधार पर 'मटियानी' उपनाम स्थापित हुआ। जब ये केवल नौ वर्ष के थे, तब इनके पिता ने परिवार का त्याग कर दिया और एक ईसाई महिला से विवाह किया। बारह वर्ष की आयु आते-आते, पहले पिता व फिर माता, दोनों की मृत्यु हो गयी। चाचा के पास पलते हुए रमेश की पढ़ाई छूट गयी और घर-बाहर के कई काम उनके जिम्मे आ गए। पहाड़ों के जंगलों व निर्जन के बीच वे लोक-गाथाओं व लोकगीतों की धुनें सुनते हुए बड़े होने लगे। इस बीच बाड़ेछीना के प्राइमरी स्कूल के प्रधानाध्यापक लक्ष्मणसिंह गैलाकोटी के अनुरोध व रोष पर रमेश की पढ़ाई फिर शुरू हुई। 1948 में वे अल्मोड़ा आ गए, जहाँ अपने छोटे चाचा के पास रहकर पढ़ाई करने लगे। यहाँ उन्हें चाचा की शिकार की दुकान पर काम करना पड़ता था। पारिवारिक कलहों के बीच उनके मन में साहित्य का बीज पनपता रहा। 1950 से उन्होंने साहित्य रचना आरम्भ की। हिमालय से प्रेम होने के कारण उन्होंने अपना नाम 'शैलेश' रखा, जोकि बाद में उनकी मूल पहचान बन गया। शुरुआत कविता से करने के बाद वे कहानी की ओर मुड़े। विभिन्न पत्रिकाओं में उनकी कहानियाँ आने लगीं। शुरुआती कहानियाँ 'अमर कहानी', 'वीर अर्जुन' व 'चित्रा' नामक पत्रिकाओं में छपीं। 1950 में 'वीर अर्जुन' में प्रकाशित 'नया इंजीनियर' कहानी पर पहली बार उन्हें आठ रुपये का मानदेय मिला। इस तरह शैलेश के भीतर का साहित्यकार आकार ले रहा था। लेकिन इसके बाद साहित्यकार बनने की ललक के कारण उन्होंने अपनी जमीन छोड़ दी तथा सन् 1951 में घर छोड़कर दिल्ली चले गए। फिर वहाँ से इलाहाबाद गए। फिर कभी मुजफ्फरनगर तो कभी पुनः दिल्ली। अन्ततः वे बम्बई पहुँचे।

यहाँ से उनका जीवन बिल्कुल नयी दिशा में चला जाता है। बम्बई में न कोई जानने वाला और न ही पास में पैसा। साहित्यकार बनने की अदम्य इच्छा ही बम्बई के नारकीय जीवन के बीच भी जिजीविषा का कारण बनी रही। वे कुलियों, उठाईगीरों, अपराधियों व भिखमंगों आदि के बीच रहे। देवसिंह पोखरिया ने लिखा है, ''....मुम्बई महानगरी में भटकते, दर-दर की ठोकरें खाते, फुटपाथों की ख़ाक छानते, नौ-दस पुलिस चौकियों में बन्द रहते, उदरपूर्ति हेतु दस रुपये प्रति बोतल पाँच बार अपना खून बेचते, मजबूरी में चोरी आदि छोटे-मोटे अपराध करते, भिखारियों की पंक्ति में बैठ कर भीख माँगते, कचरा-डिब्बों और फुटपाथों से जूठन और टुकड़े बीनते, कुलीगिरी करते, चोर-उचक्कों-दलितों-भिखमंगों-कुलियों-मजदूरों-गुण्डों के साथ जीवन-यापन करते मटियानी बेहद बदतर जीवन जीने को विवश थे।''[1] तब भी उन्होंने इस अनुभव का सृजनात्मक प्रयोग अपने साहित्य में किया। इस बीच उनकी रचनाएँ 'धर्मयुग', 'सरस्वती' व 'बाल भारती' आदि पत्रिकाओं में छपती रहीं। इसके बाद वे कभी अल्मोड़ा, कभी दिल्ली, तो कभी इलाहाबाद में रहे। 1958 में उनका विवाह नारायणी देवी (नीला) से हुआ। शैलेश मटियानी की चार सन्तानें हुईं--शुभा, राकेश, तरुलता और मनीष। जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा इलाहाबाद में बीता, जहाँ वे 1965 से 1992 तक रहे। उन्होंने अपना जीवन लेखन के सहारे ही व्यतीत किया। हिन्दी में लेखन के सहारे जीवन बिताना कठिन काम है, लेकिन शैलेश जी ने यही रास्ता चुना। अस्सी के दशक के बाद उनका जीवन और कष्टपूर्ण होता गया। एक पत्रिका द्वारा अपने व्यक्तित्व को गलत ढंग से प्रस्तुत करने पर उन्होंने पत्रिका के विरुद्ध मुकदमा किया, जिसमें अंततः उन्हें उच्चतम

न्यायालय तक गए तथा मुकदमा हार गए। आर्थिक स्थिति अधिक चुनौतीपूर्ण होती गयी। इसके बाद इनके जीवन में एक भीषण दुर्घटना घटी। भूमि-विवाद के एक सिलसिले में 13 अप्रैल 1992 को उनके छोटे बेटे मनीष की हत्या कर दी गयी। बार-बार बिखरकर खड़े हो जाने वाले शैलेश मटियानी इस क्रूरतम घटना के बाद ढह गए और कभी उबर न सके। उन्हें विक्षिप्तता के दौरे पड़ने लगे। अवसाद ने उन्हें जकड़ लिया था। जंजीरों में बाँधकर रखने की नौबत आने लगी। भय, निराशा, पीड़ा और अवसाद के मेल ने उन्हें पागलपन की स्थितियों तक पहुँचा दिया। लेखन कम होता चला गया। 'हंस' के लिए अपनी अन्तिम कहानी 'उपरान्त' उन्होंने इसी अस्वस्थता के बीच लिखी। 24 अप्रैल 2001 को दिल्ली के एक मनोचिकित्सालय में उन्होंने अन्तिम साँस ली तथा शून्य की ओर कूच कर गए।

शैलेश मटियानी लगभग सारा जीवन चुनौतियों का सामना करते रहे। सामाजिक-आर्थिक जीवन में जितनी कठिनाइयाँ उन्होंने सहीं, उन सबका प्रभाव बहुआयामी ढंग से उनकी कहानियों पर दिखता है। जीवन की इन्हीं स्थितियों के बीच उनका लेखन निरन्तर चलता रहा। उन्होंने 'विकल्प' व 'जनपक्ष' नामक पत्रिकाएँ निकालीं। आज उनकी सम्पूर्ण कहानियाँ पाँच खण्डों में प्रकल्प प्रकाशन से प्रकाशित हैं। इनमें कुल दो सौ बारह कहानियाँ संकलित हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने चालीस उपन्यासों के साथ-साथ संस्मरण, निबन्ध, लोक साहित्य व बाल साहित्य की भी रचना की। इनमें से कई पुस्तकें अभी भी अप्रकाशित हैं।

शैलेश मटियानी ने अपने आत्मकथ्य में लिखा है, ''पता नहीं सागर को पहली बार किस दिन देखा, लेकिन जब पहली बार देखा होगा तब बहुत चकित हुआ और हिमालय की फिर स्मृति हो आयी। यह भी कि यहाँ बिल्कुल दूसरा छोर है। यहाँ से पर्वत तक की यात्रा बहुत लम्बी है।....किनारा आँखों की पहुँच में है, लेकिन विस्तार जाने कहाँ तक गया होगा। जब भी देखा, विस्मय प्राणों तक में व्याप्त अनुभव होता रहा।''[2] सागर और हिमालय के बीच की यह विस्मयधर्मी-स्मृति शैलेश मटियानी मटियानी की रचना-प्रक्रिया का आधार है। विस्मय और स्मृति की इस परिधि में यथार्थ का वह ताप है, जोकि इन शब्दों को रचनात्मक अर्थ देता है। लेखक ने जिन सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का सामना किया, उन स्थितियों ने उनके लेखकीय मानस की रचना की। इसकी छाप हम लेखक के प्रथम कहानी-संग्रह की भूमिका में देख सकते हैं, जहाँ वह अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बात करते हुए पूँजीवाद के क्रूर चेहरे को पंक्ति-दर-पंक्ति उजागर करता चलता है। जब हम आज की स्थितियों को देखते हैं, तब लेखक की कहानियों में आए व्यवस्था के विकृत रूप को समझना और भी सरल व जरूरी लगने लगता है, क्योंकि आज की स्थितियाँ उसी रूप का विकास व विस्तार लगती हैं। शैलेश मटियानी की कहानियों में विषयगत वैविध्य देखते हुए यों तो विवेचन के कई पक्ष उभरकर सामने आते हैं, लेकिन यहाँ कुछ पक्षों पर विस्तृत चर्चा करके भी हम उनकी उस लेखकीय पक्षधरता को समझ सकते हैं, जिसकी ओर संकेत अभी किया है।